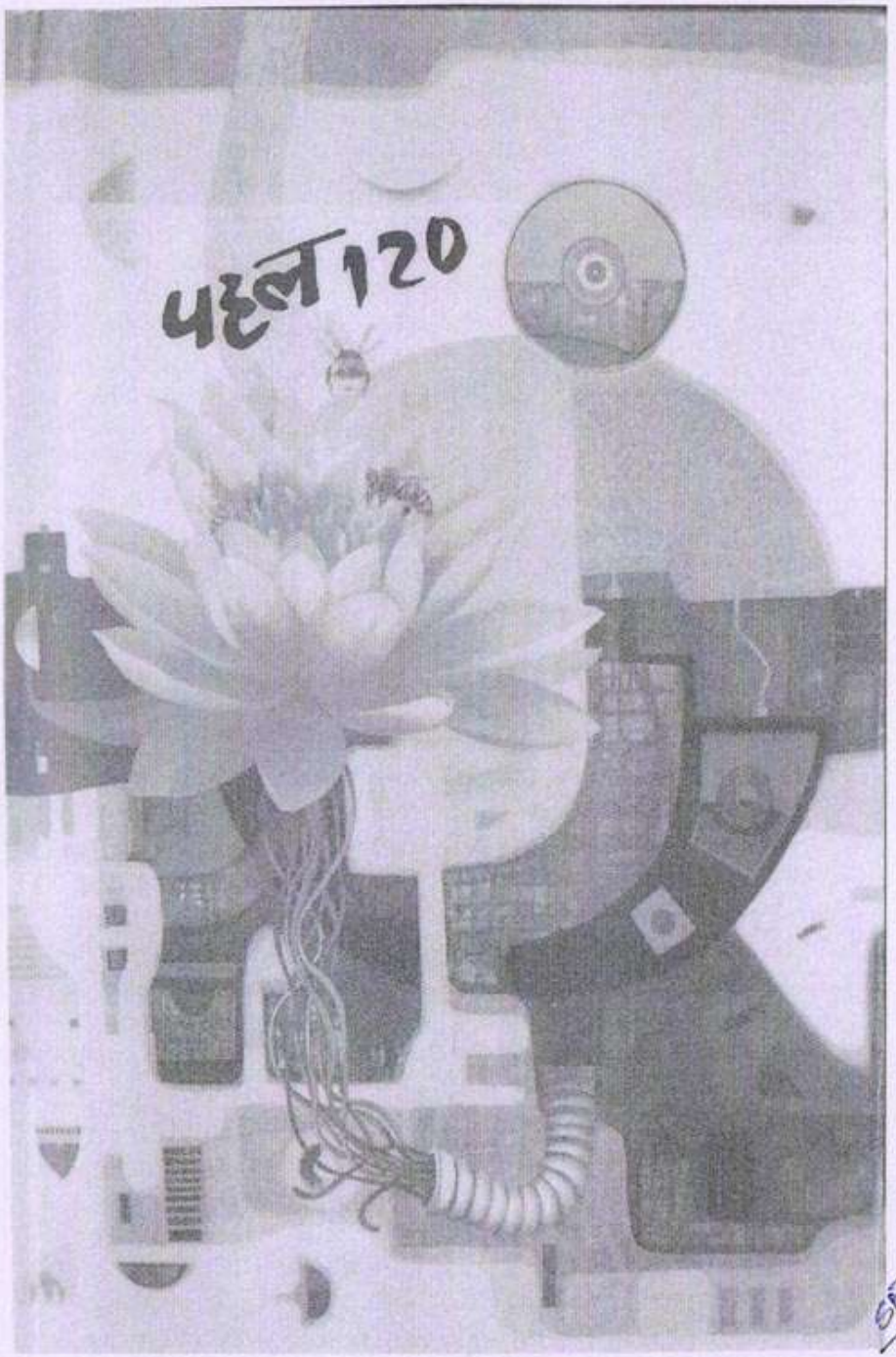

SELF ATTESTED

जन्म शताब्दी (कैफ़ी आजमी)

अजीब आदमी था वो -कैफ़ी : यूनुस ख़ान 125

सिनेमा

गर्म हवा: ख़ुद की ज़मीन पर अजनबी : दिनेश श्रीनेत 133

बस्ती-बस्ती, परबत-परबत

ट्रम्प की दीवार से गन्ने के खेतों और कोस्टारिका तक!: जितेन्द्र भाटिया 140

कथावृत्तांत

नाट्यपुरुष : राजेन्द्र लहरिया 153

चर्चा वालियाँ : शेखर मल्लिक 178

आलोचना/विमर्श

अभाव, अंधेरा और अंधविश्वासों का जंगल : सूरज पालीवाल 187

ओमप्रकाश वाल्मीकि का गद्य लेखन : कर्मेन्दु शिशिर 199

संस्कृति और राष्ट्रवाद : रवि श्रीवास्तव 207

कांशीराम के बहाने दलित जीवन संघर्ष पर विमर्श : रमेश अनुपम 217

रहट की आख़िरी घरिया का इंतज़ार : नीरज खरे 229

हाशिए की विडम्बना : अखिलेश गुप्ता 233

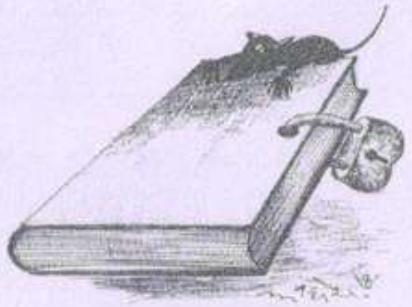

अखिलेश गुप्ता

हाशिए की विडम्बना

महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित 'सरस्वती' पत्रिका के सितम्बर, 1914 अंक में प्रकाशित **हीरा डोम** की कविता 'अछूत की शिकायत' से यह भ्रम दूर हुआ कि हिन्दी और सारे जग की कविता का उत्स कोई वियोग- जनित आह है। अभिजन कहे जाने वाले समाज ने जिसे सदियों से उपेक्षित, अपमानित एवं पददलित किया; उस तबके ने अत्याचार को सहते समय पीड़ा और बेबसी से उत्पन्न कराह को जब वाणी दी, तो उसकी बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति इस कविता में संभव हुई है -

''हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी,
हमनी के साहेब से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुख भगवनओं ने देखता जे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबिव

हमनी क इनरा के निगिचे ना जाइलेजां,
पांके से पिटि-पिटि हाथ गोड़ तुरि दैलैं,
हमनी के एतनी काहीं के हलकानी।।''[1]

सम्पन्नों का अन्ध जयघोष करने वाले समाज के खिलाफ़, शताब्दियों से जाति-प्रथा के शोषण और दमन की चक्की में पीसे जाने की यातना का यह मुखर प्रतिरोध है। आधुनिक साहित्य में यह कविता 'प्रथम दलित कवि का सुन्दर छन्द' मात्र न होकर असंख्य उपेक्षित, दमित और हाशिए पर पड़े साधारण जनों की चेतना का आख्यान भी है। साहित्य में स्व-अनुभवजनित दृष्टि के कारण, यह आत्मतुष्ट और सामाजिक यथास्थिति पर आधारित रूढ़ साहित्यिक अभिमतों एवं उनसे वाबस्ता जड़ीभूत सौन्दर्याभिरुचि और अभिव्यक्ति-प्रणालियों को भी झकझोर देती है। उरुग्वे के मशहूर लेखक **एदुंआर्दो गालियानो** का कथन है कि *''गाय हाँकने वाली बिजली की छड़ी किसी को भी उर्वर कथाकार बना सकती*

SELF ATTESTED

वे डरते हैं
कि एक दिन
निहत्थे और ग़रीब लोग
उनसे डरना
बंद कर देंगे।''[18]

(उनका डर : गोरख पाण्डेय)

लेकिन हाशिए पर एकाग्र लेखन की विडंबना यह है कि हिंदी साहित्य से वाबस्ता विमर्शों के दरमियान इसकी जगह आज भी प्रायः 'सबाल्टर्न' या निम्नमध्यवर्गीय अध्ययनों के प्रकरण तक सीमित है। हाशिए के समाज की कविता में अगर रोजमर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ा प्रेम-प्रसंग अभिव्यक्त होता हो, तो उसे तत्काल लोक-साहित्य की कोटि में गिना जाता है। पानी में घुले हुए अदृश्य नमक की मानिंद साहित्य के इतिहास की मुख्यधारा में वह शामिल नहीं की जाती। केवल दलित, आदिवासी, स्त्री अथवा अल्पसंख्यक केन्द्रित 'सबाल्टर्न विमर्श' के प्रसंग में उसे याद किया जाता है।

संदर्भ-सूची :

1. वेबलिंक- http:/kavitakosh-org/kk/अछूत की शिकायत/हीरा डोम 2. नीलाभ (सं.) अनरूंधति रॉय, 'कठघरे में लोकतंत्र', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012, पृ. 106. 3. हरिशंकर परसाई, 'पाखण्ड का अध्यात्म', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1998, पृ.101। 4. वही, पृ. 103। 5. ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'अब और नहीं...' राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009, पृ. 20-21। 6. प्रभाकर श्रोत्रिय, 'कालयात्री है कविता', राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1993, पृ. 78। 7. वैभव सिंह (अनुवाद एवं प्रस्तुति), टेरी ईगल्टन, 'मार्क्सवाद और साहित्यालोचन', आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2006, पृ. 16-17। 8. निर्मला पुतुल, 'नगाड़े की तरह बजते शब्द', भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2012, पृ. 95। 9. ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'अब और नहीं...', राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009, पृ. 60। 10. उदयप्रकाश, 'ईश्वर की आँख', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1999, पृ. 104। 11. वेबलिंक - http:/www.advasiresurgence.com/नहीं-कहीं-इसी-शहर-में। 12. कृष्ण कुमार (सं.), 'रघुवीर सहाय संचयिता', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003, पृ. 180। 13. विजय कुमार, 'कविता की संगत', आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2012, पृ.52। 14. अन्विता अब्बी (संयोजन), 'उत्तर प्रदेश- 3', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 198। 15. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 'हिंदी साहित्य का इतिहास', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृ. 213। 16. रघुवीर सहाय, 'आत्महत्या के विरुद्ध', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1985, पृ. 13। 17. असद जैदी, 'सरे-शाम', आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2014, पृ. 132। 18. गोरख पाण्डेय, 'जागते रहो सोने वालो', राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1983, पृ. 26।

संपर्क- मो. 08085913848, बिलासपुर

Journal Details

Journal Title (in English Language)	Pahal
Journal Title (in Regional Language)	पहल
Publication Language	Hindi
Publisher	Pahal
ISSN	NA
E-ISSN	NA
Discipline	Arts and Humanities
Subject	Arts and Humanities (all)
Focus Subject	Literature and Literary Theory

Copyright © 2021 Savitribai Phule Pune University. All rights reserved. | Disclaimer